FEB.
1950

चन्दामामा

PRICE
0-6-0

CHANDAMAMA : STORY MAGAZINE FOR THE YOUNG

पुराने जमाने में स्वामी भोजनानन्द नामक एक कपटी साधु रहता था। वह गाँव-गाँव घूम कर लोगों को अच्छी-अच्छी कहानी सुनाता और लम्बे-लम्बे उपदेश देता था। यही उसका पेशा था। सब लोग उसे बड़ा भारी भक्त समझते थे। उसने लम्बी दाढ़ी बढ़ा ली थी और गेरुए वस्त्र पहन लिए थे। गले में रुद्राक्ष की मालाएँ भी लटकती थी। जहाँ चार आदमी मिल जाते, वहीँ वह व्याख्यान देने लगता --

"भाइयों और बहनों ! हमेशा सच बोलो। किसी को ठगो मत। हमेशा दान धर्म करते रहो। धन का लोभ छोड़ दो और अपने पराये का भेद भूल जाओ। हमेशा कर्तव्य का ध्यान रखो। काम करो मगर फल की आशा न रखो। कर्म के फल का भार स्वामी भोजनानन्द पर छोड़ दो। वही तुम्हारी नैया खेकर पार पहुँचा देंगे। इसी राह पर चलने से तुम तर सकते हो।" इस तरह स्वामी भोजनानन्द जब व्याख्यान झाड़ने लगते तो सुनने वाले क्या बच्चे, क्या बूढ़े, क्या औरत, क्या मर्द सभी सुध-बुध खो बैठते और एक स्वर में 'स्वामी जी की जय' बोलने लगते। दुनिया के कामकाज से उनका जी उचट जाता और उनमें से ज्यादातर लोग स्वामी जी के चेले बन जाते।

जब इस तरह से बहुत लोग उसके चेले बन गए, तो उसने भगवान की पूजा के बहाने उनसे बहुत सा रुपया जमा कर लिया ,इस रुपए से उसने भगवान की एक सोने की ठोस मूर्ती बनवाकर अपनी झोली में छुपा ली।

इस बगुला-भगत का बनावटी रूप देखकर सब लोग धोखा खा गए। वे सब आपस में एक दूसरे से कहते - "हमारे स्वामी जी तो मानो भगवान के अवतार हैं। देखो न

उन्हें धन तथा रूप का मोह छू तक नहीं गया है। सचमुच हमारे भाग से ही ऐसे गुरु हमें मिल गए।

इस तरह थोड़े ही दिनों में उसका नाम छोटे-छोटे गाँव में भी फैल गया। बहुत से धनी-मानी लोग उसके चेले बन गए। जहाँ देखो वहीँ स्वामी जी की चर्चा होने लगी। अब लोगों में उन्हें अपना मेहमान बनने के लिए होड़ सी होने लगी। सभी उन्हें अपने घर बुलाना चाहते। हर कोई उन्हें अपने घर मिला-पिला कर आसानी से तर जाना चाहता था। और स्वामी जी ऐसे दयालु थे कि किसी को निराश करना नहीं चाहते थे। लेकिन बेचारे करते क्या ? उनके पास काफी समय न था।

स्वामी जी बहुत से गाँव में घूमे। कितने ही अमीर लोग स्वामी जी को भोजन करा कर बड़ी आसानी से तर गए। भला स्वामी जी के सिवा यह काम और कौन कर सकता था?

आखिर एक दिन स्वामी जी के एक गरीब चेले की बारी आई। उसका न्योता स्वामी जी ने स्वीकार कर लिया। इससे बढ़कर और क्या हो सकता था ? लेकिन वह बेचारा बहुत गरीब था। उसे कोई उपाय न सूझा कि वह उन्हें क्या खिलावे ? अगर स्वामी जी की सेवा में कोई त्रुटि रह गई तो डूब मरने के लिए फिर कहीं चुल्लू भर पानी तक न मिलेगा। अगर स्वामी जी का रोंआ दुखेगा तो उसे कितना बड़ा पाप लगेगा ! आखिर किसी न किसी तरह उसने भोजन का सारा प्रबन्ध कर लिया। स्वामी जी आए तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। ऐसा तर-माल तो उन्हें बड़े-बड़े अमीरों के घर से भी न मिला था। उन्होंने

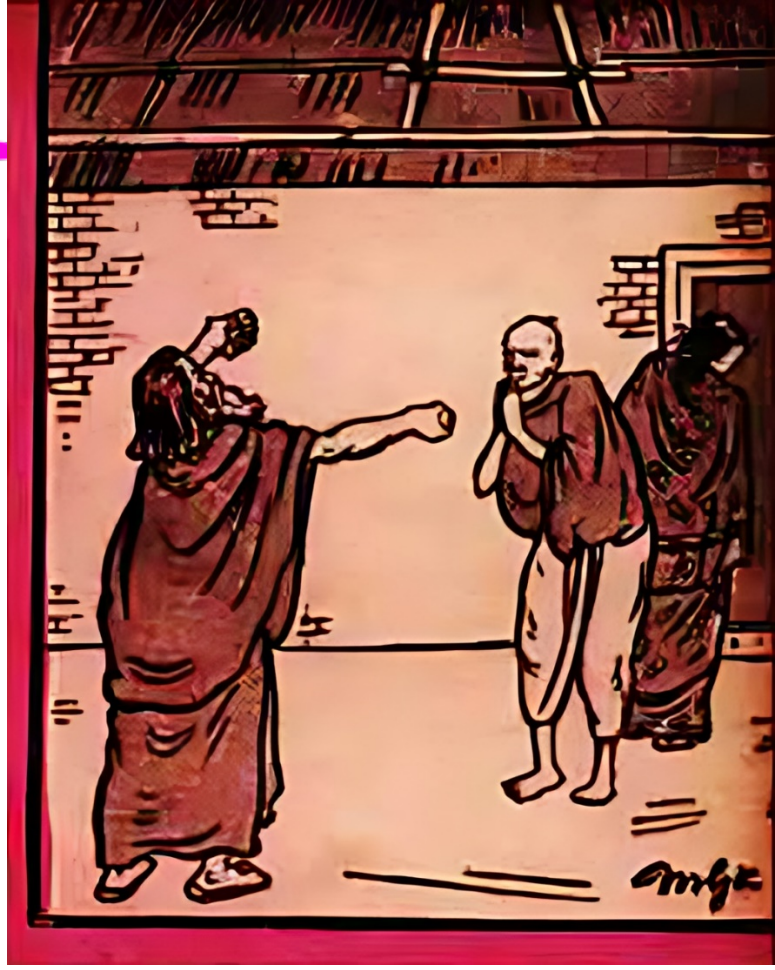

खाने-पीने के बाद पूछा -"बेटा ! हमने तो सुना था कि तुम बड़े गरीब हो। फिर तुमने ऐसा राजसी भोग कहाँ से जुटाया ?"

चेला सर झुका कर बोला -"यह सब स्वामीजी की कृपा है।"

स्वामी जी ने मन ही मन सोचा - "मालूम होता है इस पर हमारे व्याख्यानों का जादू खूब चढ़ा है।" उन्होंने चेले से कहा -"बेटा ! तुम्हारी सेवा, विनय और शील देखकर हम बहुत प्रसन्न हो गए हैं। इसलिए हमारी यह इच्छा है कि और दो-चार दिन यहीं ठहर कर तुम्हारे मन को आनन्द पहुँचाएँ ।

यह सुनकर उसके दूसरे सब चले अचरज में पड़ गए। उन्होंने सोचा - "स्वामी जी तो बड़े-बड़े अमीरों के घर भी एक-दो दिन से ज्यादा नहीं ठहरते। सचमुच यह बड़ा भाग्यशाली है। नहीं तो इसकी झोपड़ी में स्वामी जी क्यों ठहरना चाहते ?"

लेकिन स्वामी जी की आवाज सुनते ही उस गरीब के सिर पर पहाड़ सा टूट पड़ा। यहाँ तो एक ही दिन की दावत में उसका दिवाला निकल गया था। फिर चार दिन तक स्वामी जी को वह क्या खिलाएगा ?

आखिर किसी तरह उस बेचारे ने अपने आप को ढाँढस बँधाया। उसे स्वामी जी का उपदेश खूब याद था। स्वामी जी ने कहा था -"अपने पराए का भेद भुला दो। काम करो, अगर फल का भार स्वामी भजनानन्द पर छोड़ दो।" उसने आज इन बातों को याद किया।

उस गरीब के घर स्वामी जी चार दिन ठहरे। राजा महाराजाओं के घर भी

उनकी वैसी आव-भगत नहीं हुई थी। स्वामीजी उसे चेले से बहुत खुश हुए। उन्होंने उसे अनगिनत आशीष दिए। लेकिन उनके मन में बार-बार अचरज होता।

वे बार-बार उनसे पूछते -"बेटा ! हमने तो सुना था तुम बड़े गरीब हो। फिर तुमने इतनी धूमधाम से हमारी सेवा-टहल कैसे की ?"

चेला हर बार यही जवाब देता -"यह सब स्वामी जी की कृपा है। नहीं तो मेरी बिसात ही क्या ?"

चार-पाँच दिन हो जाने के बाद स्वामी जी वहाँ से चलने लगे। जाने से पहले उन्होंने अपने चेले को बुलाकर डेढ़-दो घण्टे तक लम्बा उपदेश दिया। सब कुछ सुनकर चेले ने इतना ही कहा -"सब स्वामी जी की कृपा है।"

राह में थोड़ी दूर चलने के बाद स्वामी जी के मन में खटका पैदा हुआ। जाने क्यों उन्हें अपनी झोली बहुत हल्की मालूम हुई।

उन्होंने थरथराते हाथों से झोली खोली और टटोल कर देखा। सोने की मूर्ति हाथ आई। अरे-- इतनी हल्की ! बाहर निकाल कर उलटा-पुलटा तो मालूम हुआ कि मूर्ति अन्दर से खोखली हो गई है। पँसेरी भर सोने में से सिर्फ चार-पाँच तोला ही बच गया है। स्वामी जी की आँखों के आगे अँधेरा छा गया और उन्होंने मन ही मन कहा -"मैंने आज तक लाखों को उपदेश दिया और हजारों को मुक्ति पाने का उपाय बतलाया। लेकिन आज मुझे एक ऐसा चेला मिला जिसने मेरी आँखों की पट्टी खोल दी और मुझे मुक्ति का मार्ग दिखा दिया।"

एक गाँव में एक बूढ़ा रहता था। उसका नाम क्या था यह तो मुझे नहीं मालूम लेकिन गाँव के लोगों से 'बाबा' कहते थे। बाबा बड़ा विद्वान, बुद्धिमान और दयावान था। उस गाँव के सब लोग उसका बड़ा सम्मान करते थे। उस गाँव का मुखिया भी वही था। गाँव के छोटे बच्चे बाबा को बहुत प्यार करते थे। बाबा को देखे बिना और उनसे कुछ बात किए बिना बच्चों को चैन नहीं था।

उस गाँव के सब लोग बाबा को अपने पिता के समान मानते थे। अगर किसी को कोई तकलीफ होती तो वह दौड़ा-दौड़ा बाबा के पास पहुँच जाता था। बाबा भी सबको अपने बच्चों के समान समझना और उनकी मदद करता रहता था। उसकी सलाह के बिना गाँव का कोई काम नहीं होता था।

बाबा बिल्कुल अकेला था। न कोई बीवी न बाल बच्चे।

बाबा हमेशा कुछ न कुछ पढ़ता लिखता रहता था। उसे अच्छे-अच्छे ग्रन्थ से बड़ा प्रेम था। इसलिए उसने गाँव से थोड़ी दूर एक ऊँचे टीले पर अपना घर बना लिया था। वहाँ कई अलमारियों में उसकी किताबें जतन से रखी रहती थी। बच्चों ! यह न समझना कि उसकी किताबें तुम लोगों की किताबों की तरह छुपी हुई होती थी। नहीं, उसे जमाने में छापेखाने थे कहाँ ? उस समय किताबें हाथ से ही लिखी जाती थी। इसलिए इसमें बहुत मेहनत लगती थी और उसका दाम भी बहुत ज्यादा होता था। एक-एक किताब खरीदने में बहुत सारा रूपया लग जाता था। बाबा की सभी किताबें बहुत वेशकीमती थी।

बाबा के बैठकखाने से हरे-भरे खेत और मैदान दिखाई देते। वह दृश्य ऐसा लगता था मानो हरि मखमली कालीन बिछा दी गई हो। खेतों में हमेशा किसान लोग काम करते हुए दिखाई देते। बाबा यह सब देखते एक किताब लेकर बैठ जाते और फिर तन मन की सुध भूल जाते।

जिस टीले पर बाबा का घर था उसके नीचे ही गाँव बसा था। गाँव के एक छोर पर एक नदी बहती थी। गाँव की जमीन की सतह नीची थी। इसलिए नदी के उस किनारे पर पानी को रोकने के लिए पत्थरों का एक बाँध था। एक दिन दोपहर को बाबा घर में बैठे-बैठे किताब पढ़ रहे थे कि अचानक उनकी नजर नदी के बाँध पर पड़ी। बाबा जानते थे कि बाँध एक जगह कमजोर हो गया था। उसकी मरम्मत भी की गई थी। लेकिन न जाने क्यों उसमें फिर से दरारें पड़ गई थी। बाबा ने देखा उन्ही दरारों से पानी धीरे-धीरे बाहर निकल रहा है। बाबा जान गए कि थोड़ी ही देर में दरार बड़ी हो जाएगी और एक घण्टे में बाँध टूट जाएगा। उन्होंने तुरन्त किताब बन्द कर दिया।

बाबा बड़े सोच में पड़ गए। गाँव वाले औरत-मर्द सभी खेतों में काम करने चले गए थे। घरों में बच्चों, बूढ़ों और अपाहिज़ों के सिवा और कोई न थे। उन विचारों को स्वप्न में भी बाँध टूटने की आशङ्का न हुई थी। थोड़ी ही देर में अब बाँध टूटेगा और सारा गाँव बह जाएगा। तो इन अबोधों को डूबने से कैसे बचाया जाए ? बाबा के सामने यही सवाल था। बाबा बूढ़े थे। वह खुद खेतों में जाकर सबको सूचित नहीं कर सकते थे।

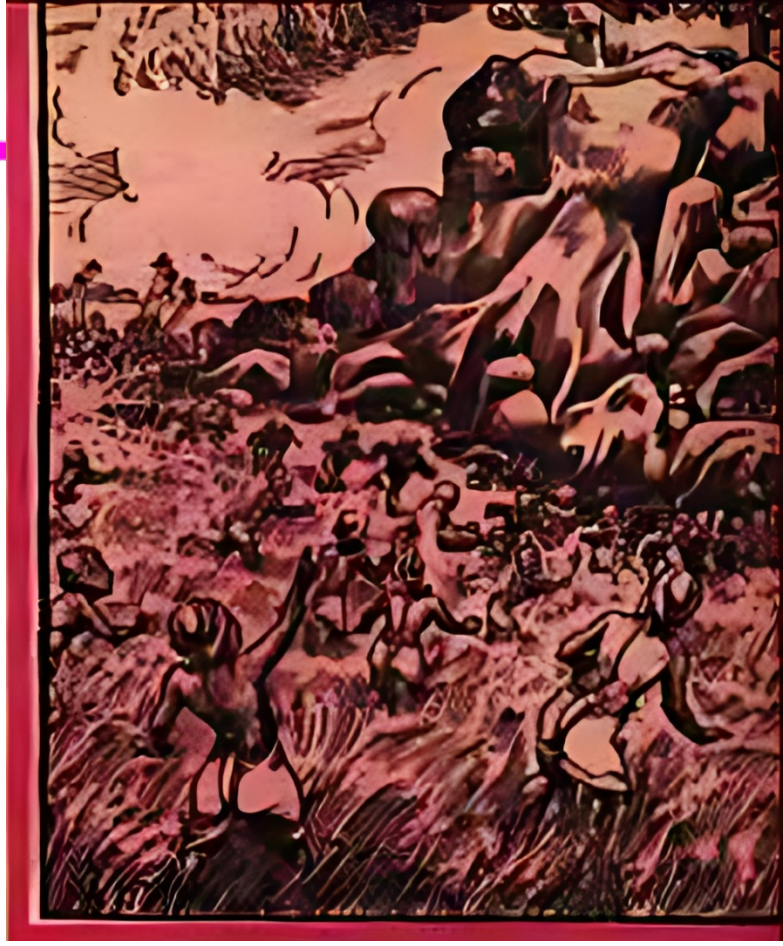

खबर देने के लिए पास में और कोई था नहीं। बाबा के घर के आस-पास कोई घर भी नहीं था। और इतना समय भी कहाँ था ? न जाने बाँध कब टूट जाए ? तो फिर किया जाए ?

सोचते सोचते बाबा ने फिर एक बार दरार की ओर देखा। दरार तब तक और भी चौड़ी हो चुकी थी। पानी और भी तेजी से बहाने लग गया था।

बाबा ने तुरन्त रसोई घर में जाकर थोड़ी सी आग ले ली। सबसे पहले झटपट उसने प्राणों से भी प्यारी अपनी किताबों में आग लगा दी। उसके बाद घर के पिछवाड़े में पड़ी पुआल की ढ़ेरी को फूँक दिया। कुछ क्षण में टीले के चारों ओर धुआँ ही धुआँ छा गया और लपटे भड़क उठी।

टीले पर से धुएँ के घटा-टोप बादल उमड़ते देख खेतों में काम करते हुए लोग चिल्लाते हुए दौड़ पड़े -"दौड़ो ! दौड़ो ! हाय रे, बाबा के घर में आग लग गई ,दौड़ो। दौड़ो।" सारा गाँव टीले पर जमा हो गया और आतुरता से आग बुझाने की कोशिश करने लगे।

लेकिन बाबा ने लोगों को डाँट कर कहा -"चिल्लाओ मत ! बेकार हल्ला मत करो। जो मैं कहता हूँ मुस्तैदी से करो। दौड़ कर घर जाओ। बच्चे बूढ़े माल-मवेशी जो कुछ घर में हो सब कुछ झटपट लेकर इस टीले पर इकट्ठा कर दो। देखना ! घर में कोई छूट न जाय। तुरन्त जाओ। एक पल की भी देरी न करो। समय नहीं है। पीछे सब कुछ बता दूँगा।

यह सुनकर सब लोग पशो-पेश में पड़ गए। लेकिन किसी की मजाल थी जो बाबा का हुक्म टालता। सबों को खूब

मालूम था कि बाबा कभी झूठ नहीं बोलता और उसकी हर बात में कोई गूढ़ अर्थ जरूर रहता है। इसलिए लोगों ने जरा भी देरी न की। दौड़े-दौड़े अपने घर गए और बच्चों, बूढ़ों माल-मवेशियों सबको टीले पर ले आए। कोई पीछे नहीं छूटा। बाबा का मतलब किसी की समझ में नहीं आता था। सब लोग अचरज में पड़े हुए थे। इतने में बाबा ने बाँध की तरफ ऊँगली उठाते हुए कहा - "जरा उधर तो देखो। "

बाबा की बात पूरी भी न हुई थी की भयङ्कर आवाज के साथ वह बाँध टूट गया। बाँध का टूटना था की नदी का पानी उछला और सारा गाँव डूब गया।

अब बाबा की बातें सबकी समझ में आ गई। बाबा ने उनको बचाने के लिए कितना बड़ा त्याग किया था, यह भी उनको मालूम हो गया। बाबा के प्रति उनकी श्रद्धा सौ गुनी बढ़ गई। जब लोग जान गए कि बाबा ने उनको बचाने के लिए अपनी जान से भी प्यारी किताबों में खुद अपनी हाथों से आग लगाई थी, तब उनकी बिह्वलता की हद न रही। वह फूट-फूट कर रोने लगे।

तब बाबा ने कहा -"भाइयों ! रोओ नहीं। यह सच है कि मैं उन किताबों को बहुत प्यार करता था। लेकिन तुम लोगों की जान बचाने के लिए किताब क्या अपनी जान तक दे सकता हूँ। मेरे लिए यही सबसे बड़ी खुशी की बात है कि तुम सब लोग इस तरह बाल-बाल बचकर यहाँ आ गए। "

कुछ दिन बाद जब वह गाँव फिर से आबाद हुआ, तो उसका नाम पड़ा "बाबा नगर"।

एक शहर में एक राजा रहता था। वह बड़ा शक्की था। अपनी इस कमजोरी के कारण वह कभी-कभी बड़ी मुसीबत में पड़ जाता था। इस शहर में बाबूराम नाम का एक बड़ा धूर्त रहता था। वह अपने को बड़ा भारी ज्योतिषी कहता था और लोगों को ठगता फिरता था। लेकिन वास्तव में वह ज्योतिष विद्या बिल्कुल नहीं जानता था। पर अपनी चतुराई से वह थोड़े ही दिन में मशहूर हो गया। उसको राजा ने भी अपना दरबारी ज्योतिषी बना लिया।

एक बार उस राज्य में अकाल पड़ा। राजा ने ज्योतिषी को बुलाकर पूछा - "बताओ ! यह काल कैसे दूर हो सकता है ?"

ज्योतिषी ने थोड़ी देर तक सोच विचार कर जवाब दिया -"आप अकाल की कुछ चिन्ता न कीजिए। उससे भी एक बड़ी भारी मुसीबत इस राज पर आने वाली है। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि कोई पड़ोसी राजा शीघ्र ही इस राज पर चढ़ाई करने वाला है। यों कहते कहते वह बीच में ही रुक गया। राजा तो शक्की था ही। ज्योतिषी की बातें सुनकर वह और भी घबरा गया और पूछने लगा -"तुम्हारे पोथी-पत्रे और क्या कहते हैं ? बताओ तो।" "पत्रा बताता है कि आगे बहुत बुरे दिन आने वाले हैं। आपकी जन्म पत्री तो कहती है कि आपको अपना राज-पाट खोकर जङ्गल में छिपकर रहना पड़ेगा। मैं भी इसी के बारे में सोच रहा हूँ ।" बाबूराम ने बहुत भय दिखाते हुए कहा।

यह सुनकर राजा को इतनी चिन्ता हुई कि वह बीमार पड़ गया। उसकी बीमारी की खबर सुनकर पड़ोस का एक राजा सचमुच ही चढ़ आया। राजा ने फिर बाबूराम की राय माँगी। बाबूराम ने कहा - "जन्म पत्रिका के अनुसार तो आपको जङ्गल में जाकर

रहना ही है। इसलिए चुपके से भाग जाइए तो बेहतर हो।" उसकी यह बातें सुनकर बेवकूफ राजा बहुत-सा धन साथ लेकर चुपके से जङ्गल की तरफ भाग गया। इस तरह पड़ोसी राजा ने बड़ी आसानी से उस राज पर कब्जा कर लिया।

राजा तो अब जङ्गलों की खाक छानने लगा और धूर्त ज्योतिषी शहर में मौज मार रहा था। नए राजा की खुशामद करके वह दरबारी ज्योतिषी बना रहा।

इतना ही नहीं, इसने नए राजा के ऐसे कान भरे कि वह पुराने राजा को जान से मरवा डालने की धुन में पड़ गया। उसने ऐलान किया कि जो उस भगोड़े राजा का सिर काट कर ले आएगा उसे बड़ा भारी इनाम दिया जाएगा। यह सुनकर ज्योतिषी का मन ललचा गया और वह सोचने लगा कि किसी न किसी तरह उस राजा का सिर काट कर इनाम पाना चाहिए।

इसलिए वह दरबार से कुछ दिन की छुट्टी लेकर उस जङ्गल में पहुँचा जहाँ उसका पुराना मलिक बड़े कष्ट से अपने दिन काट रहा था। राजा के पास जाकर उसने ऐसी सूरत बनाई जैसे सचमुच ही वो राजा की हालत पर तरस खा रहा हो। उसने झूठ-मूठ कह दिया -"मुझे नए राजा ने शहर से निकाल दिया है।" बेचारे राजा को उसकी बातें सुनकर बड़ा तरस आया।

बाबूराम वही जङ्गल में रहने लगा जिससे राजा को उस पर पूरी तरह विश्वास हो। वह हमेशा राजा के साथ रहता और कभी अलग नहीं होता था।

एक दिन राजा अपने मन्त्री और बाबूराम के साथ जङ्गल में घूमने निकला। कुछ देर जाने पर राजा को बड़े जोर की प्यास लगी। वहीँ नजदीक में कुआँ था। बाबूराम ने एक बाल्टी से पानी भरकर राजा को पीने के लिए दिया। राजा बाल्टी उठाकर पीने

लगा तो उसे पानी में पेड़ की डाल पर बैठी हुई गिलहरी की परछाई दिख पड़ी। जब बाल्टी में पानी न रहा तो परछाई भी जाती रही। राजा तो शक्की मिजाज का था ही। अब उसे शक हो गया कि पानी के साथ-साथ गिलहरी भी उसके पेट में चली गई है। वह बहुत घबराया। उसने ज्योतिषी से यह बात कही। ज्योतिषी ने तुरन्त थी हाँ मैं हाँ मिलाई। "हाँ महाराज ! मैंने भी अपनी आँखों से देखा था। गिलहरी जरूर आपके पेट में चली गई है। नहीं तो वह जाएगी कहाँ ? उसके पर तो नहीं है।" यह सुनकर राजा और भी घबरा गया। उसे सचमुच ऐसा लगा जैसे पेट में बड़ी जोर से दर्द हो रहा है। लेकिन मन्त्री वहीं खड़ा-खड़ा ज्योतिषी की सारी चालबाज़ी देख रहा था।

थोड़ी देर में हकीम-बैद आए और उन्होंने राजा को कै कराने के लिए एक दवा दी। उसी समय संयोग से पेड़ पर से गिलहरी नीचे गिरी। यह देखते ही राजा ने सोचा कि गिलहरी उसी के पेट से निकल गई है। बस उसके पेट का सारा दर्द दूर हो गया और वह बिल्कुल चङ्गा हो गया।

तब मन्त्री ने राजा से ज्योतिषी की सारी पोल खोल दी। उसने उसके मन में अच्छी तरह जमा दिया कि इसी की बदमाशी के कारण आपको अपने राज-पाट से हाथ धोना पड़ा है। राजा भी अपनी बेवकूफी पर बहुत पछताया।

कुछ दिन बाद मन्त्री ने जङ्गली लोगों को जमा कर एक बड़ी फौज बनाई और राजा का खोया हुआ राज्य फिर से जीत लिया। उस धूर्त ज्योतिषी को बन्दीखाने में सड़ना पड़ा।

धीरे-धीरे राजा का स्वभाव भी बिल्कुल बदल गया। फिर उसने कभी ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास न किया।

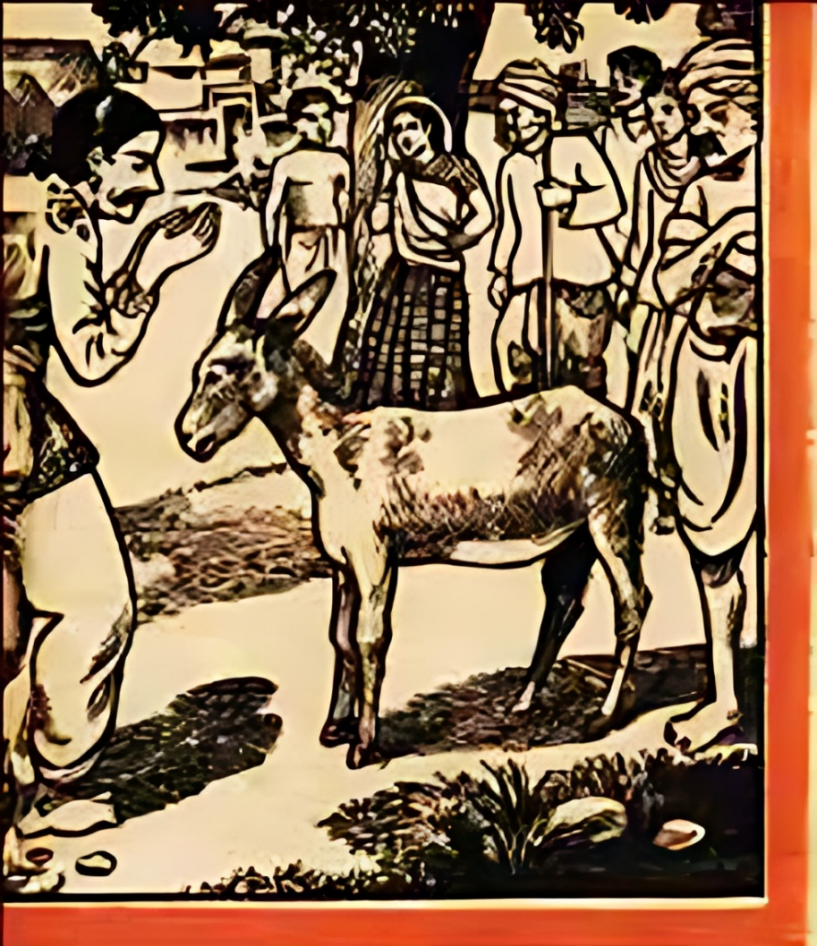

भेड़िया

बच्चों ! क्या तुम भेड़िया-धसान के मानी जानते हो ? क्या तुमने कभी भेड़ के झुण्ड को जाते देखा है ? एक भेड़ जिस ओर चल देती है, सभी भेड़ें उसी और चलने लगती हैं। कोई भेड़ अगर कुएँ में धँस जाए तो दूसरे भेड़ भी आँख मूँदे धँस जाएँगे। इसलिए भेड़िया-धसान का मानी होता है -'आँख मूँदकर उठकर दूसरों के पीछे चलना'।

जानते हो -भेड़िया-धसान सिर्फ भेड़ में ही नहीं; आदमियों में भी पाई जाती है। इसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो--

एक समय एक राजा था। उसका मन्त्री बड़ा समझदार था और नाम भी था उसका 'बुद्धिमान'। एक दिन राजा ने अपने मन्त्री को बुलाकर कहा -"भेड़िया-धसान का मतलब क्या है ?" मन्त्री ने थोड़ी देर तक सोच कर कहा -"हुजूर ! मुझे दो दिन की मोहलत मिले तो इसका जवाब दे सकूँगा।" राजा ने दो दिन की मोहलत दे दी।

मन्त्री दूसरे दिन तड़के उठ नहा धोकर तिलक लगाया और गाँव के बाहर तालाब के किनारे चला गया। वहाँ कई खच्चर चर रहे थे। मन्त्री ने उनमें से एक की तीन चार प्रदक्षिणा की और उसका एक बाल नोच कर कान पर रख लिया। तालाब के किनारे कुछ लोग जमा हो गए थे। एक ने पूछा -"मन्त्री महाराज ! यह आप क्या कर रहे हैं ?"

"यह खच्चर काशी जी की यात्रा कर आया है। पहले जन्म में कोई ऋषि मुनि

धसान

रहा होगा। देखते नहीं उसकी आँखों से भक्ति टपक रही है।" मन्त्री ने जवाब दिया। बस ! एक-एक करके सब लोग उसकी प्रदक्षिणा करने और उसका एक-एक बाल नोच कर कानों पर रखने लगे। गाँव भर में सनसनी सी दौड़ गई। सभी लोग वही करने लगे जो मन्त्री ने किया था। थोड़ी देर में उस खच्चर के सारे बाल नुच गए। वह लहूलुहान हो गया और तड़पने लगा। इतने में राजा को भी यह खबर लगी और वह भी वहाँ आया। वहाँ पहुँचकर उसने भी खच्चर की तीन चार प्रदक्षिणा की और खोज ढूँढ कर एक बाल नोच लिया। बेचारा खच्चर मौत का मेहमान हो गया।

इतने में खच्चर वाला आया और खच्चर को मरा पड़ा देखा हाय तौबा मचाने लगा। वह राजा के पास अपनी शिकायत ले गया -"दुहाई सरकार की ! मैं बाल बच्चों वाला आदमी हूँ। बड़ा गरीब हूँ। किसी

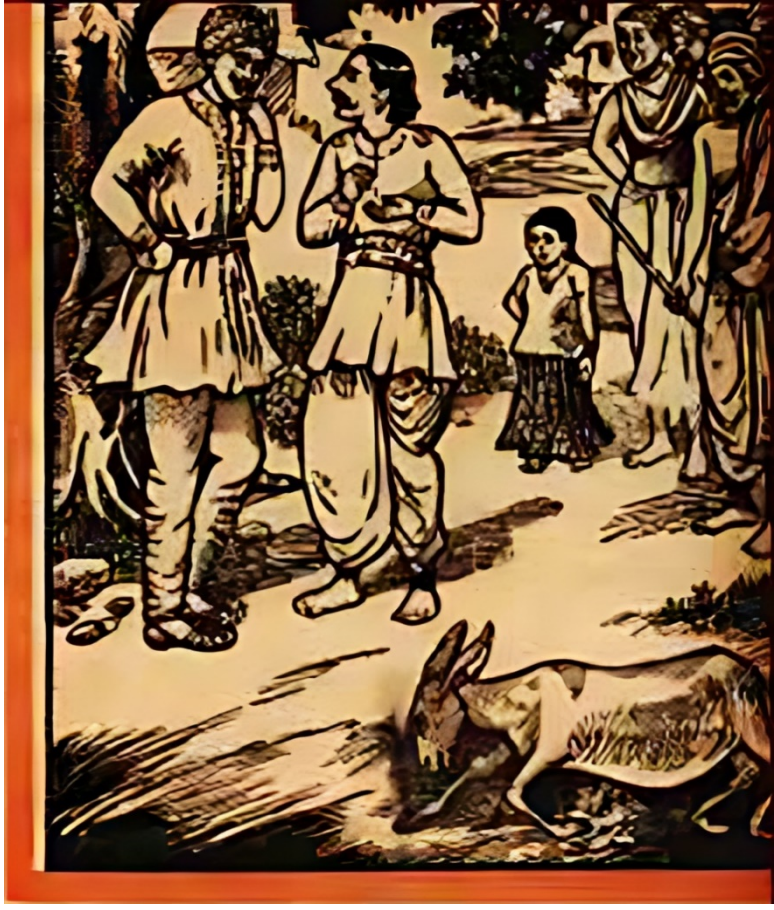

तरह इस खच्चर पर माल लाद कर उस किराए के रुपए से पेट पालता था। खच्चर तो मर गया। अब उसका दाम कौन देगा ?"

राजा ने मन्त्री को बुलाकर सलाह पूछी। मन्त्री ने कहा -"आप भेड़िया-धसान का मानी जानना चाहते थे न! देखिए यही भेड़िया-धसान है। अब तो आपने अपनी आँखों से देख लिया न ! कहिए ! भेड़िया-धसान का मानी समझ गए ?"

राजा मन्त्री की बात सुनकर बहुत खुश हुआ। उसने खच्चर वाले को खच्चर का दाम दे दिया।

एक गाँव में एक विद्वान रहता था। सुन्दरता और विद्वता में कोई उसकी बराबरी न कर सकता था। सब लोग उसकी बड़ाई करते थे। लेकिन बड़ों का कहना है कि लक्ष्मी और सरस्वती में नहीं बनती। वह विद्वान भी बड़ा गरीब था। वह जो कुछ कमाता था, पेट भरने के लिए भी काफी नहीं होता था।

उस विद्वान की स्त्री काली-कलूटी थी। उसे इसका भी बड़ा सोच रहता था। वह मन ही मन कहता - "भगवान ! मैं थोड़ा बहुत पढ़ा लिखा हूँ। लोग मेरी बड़ाई भी करते हैं। लेकिन इन सब से क्या फायदा ! जबकि मेरी स्त्री ही काली कलूटी है। क्या ही अच्छा होता यदि मेरी स्त्री भी दूसरी स्त्रियों की तरह गोरी चिट्टी होती।"

एक दिन एक साधु उस विद्वान के घर आया। पति पत्नी दोनों ने साधु के पाँव पखारे। बड़े प्रेम से उसे खिलाया पिलाया। खा-पीकर साधु जब बाहर चबूतरे पर बैठा, उस विद्वान ने जाकर उसके पाँव छूकर बड़ी नम्रता के साथ प्रणाम किया।

विद्वान की खातिरदारी से खुश होकर उस साधु ने उसे तीन नारियल दिए और कहा -"बेटा ! देखो, यह तीन नारियल है। इनमें से एक-एक नारियल को फोड़ कर तुम अपने मन में एक-एक चीज की कामना करो। यह मामूली नारियल नहीं है। इनमें तुम्हारी तीन कामनाएँ पूरी हो जाएगी।" यह कहकर वह साधु चला गया।

विद्वान ने अन्दर जाकर नारियल अपनी स्त्री को दिखाए और कहा - "यह नारियल साधु बाबा के प्रसाद हैं। इससे हमारी तीन इच्छाएँ पूरी होगी। बोलो सबसे पहले मैं क्या कामना करूँ ? मेरी तो पहली चाह है कि तुम गोरी और खूबसूरत बन जाओ।"

लेकिन उसकी स्त्री ने कहा -"मेरे सुन्दर बन जाने से ही क्या होता है ? यहाँ तो यही फिक्र लगी रहती है कि चूल्हे पर हाँडी कैसे चढ़े। इसलिए पहले अमीर होने की कामना कीजिए। पीछे आपका जो जी चाहे पसन्द कर लीजिएगा।"

लेकिन उस विद्वान को स्त्री की बातें पसन्द नहीं आई। उसने कहा - "क्या तुम्हारी अकल मारी गई है ! क्या तुम खूबसूरत बना नहीं चाहती ? हमारे पास तीन नारियल है। एक को फोड़ने से तुम्हारा रूप बदल जाएगा। फिर दो बच जाएँगे। उनमें हम जो चाहे माँग सकते हैं।" यह कहकर उसने एक नारियल फोड़ा और मन ही मन स्त्री की सुन्दरता चाही। आश्चर्य ! नारियल का फटना था कि विद्वान की स्त्री का रूप बिल्कुल बदल गया। उसका सारा बदन कुन्दन की तरह दमकने लगा। विद्वान की खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपनी स्त्री का रूप देखकर फूला न समया।

धीरे-धीरे यह बात सारे गाँव में फैल गई। लोग आकर देखते और दाँतों

तले ऊँगली दबाते। यह कैसा गजब है ! कल तक यह कैसी काली कलूटी थी और आज अचानक इतनी सुन्दर ! गाँव के लोग-लुगाई विद्वान की स्त्री को देखकर इसी तरह की बातें करते थे।

यह बातें सुनकर विद्वान और भी खुश होता और अपने मन में कहता -"मेरी स्त्री कैसी सुन्दर हो गई। रानियाँ इसके आगे पानी भरेंगे। ओह ! मैं कितना भाग्यशाली हूँ। साधु बाबा की कैसी कृपा हुई मुझ पर। इसी तरह फुला फुला फिरने लगा।

एक दिन उस विद्वान को किसी काम से कहीं बाहर गाँव जाना पड़ा। उसने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा -"मैं जरा दूसरे गाँव जा रहा हूँ। दो-तीन दिन में लौट आऊँगा। तुम जरा होशियार रहना। घर छोड़कर इधर-उधर न जाना।" इतना कहकर वह चला गया।

दूसरे दिन वहाँ का राजा घोड़े पर सवार होकर घूमने निकला। घूमते फिरते वह विद्वान के घर के पास पहुँचा। उस समय विद्वान की स्त्री ने किसी काम से घर का दरवाजा खोला। उस राजा का चाल-चलन अच्छा नहीं था। उसका नाम सुनते ही वहाँ की औरतें थर-थर काँपने लगती थीं। जब वह घूमने निकलता था तो सभी घरों की खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द हो जाते थे। बेचारी विद्वान की स्त्री को उसके आने की खबर न थी। राजा ने उसको देखते ही घोड़े को रोक लिया। उसका रूप देखते ही उसकी नीयत डोल गई थी। घोड़े से उतरकर वह लपका और जाकर विद्वान की स्त्री का हाथ पकड़ लिया। बेचारी डर के मारे थर-थर काँपने लगी।

"चलो मेरे साथ। रनवास में आराम से रहना। मैं तुमसे ब्याह करूँगा और तुम्हें रानी बनाऊँगा।" राजा ने कहा।

विद्वान की स्त्री ने कोई जवाब न दिया। वह हाथ छुड़ाने की कोशिश करने लगी। लेकिन राजा उसे जबरदस्ती घोड़े पर चढ़ाकर अपने घर में ले गया। वहाँ उसने एक सुन्दर महल में उसे कैद कर रखा। फिर सिपाहियों को बुलाकर कहा - "देखो ! तुम लोग इस महल के आगे पहरा देते

रहना। खबरदार किसी को महल में घुसने ना देना।"

विद्वान की स्त्री दो दिन तक खाना पीना छोड़ कर रोती-कलपती बैठी रही। अब वह पछताने लगी -"कहाँ से वह साधु आया और नारियल दे गया। उसके पति ने उसे क्यों सुन्दर बनाने की कामना की? न वह सुन्दरी होती और न जान इस आफत में पड़ती।"

विद्वान दो दिन बाद जब घर लौटा तो उसे सब हाल मालूम हुआ। राजा का यह अत्याचार देखकर उसकी देह में आग लग गई।

उसने तुरन्त दूसरा नारियल फोड़ा और मन ही मन कहा -"हे भगवान ! मेरी स्त्री भालू बन जाय।" वह खूब जानता था कि उस दुष्ट राजा को अपनी करनी का फल मिल जाएगा।

राजा के महल में बैठी विद्वान की स्त्री एकाएक भयङ्कर भालू बन गई। भालू और भूखा प्यासा ! अब क्या था ? भालू ने राजमहल के

शीशे, अलमारियाँ, खिड़कियाँ किवाड़ और भी बहुत सी कीमती चीजें तोड़फोड़ डाली। जब तोड़ने फोड़ने के लिए कोई सामान न बचा तो बैठकर गुर्राने लगा।

उस रात को राजा खूब बन-ठन कर विद्वान की स्त्री को देखने आया। वह चुपके से चोर की तरह महल के अन्दर घुसा। उसका अन्दर पाँव रखना था कि भालू गुर्रा कर उस पर टूट पड़ा और अपने पैने नाखून से उसको चीरने फाड़ने लगा। राजा जोर से

चीखने चिल्लाने लगा। लेकिन उसकी पुकार सुनने वाला वहाँ था कौन ? पहरेदार सब पहले ही भाग गए थे। भालू ने राजा की जान ले ली। इस तरह उसे अपने पापों का फल मिल गया।

कुछ देर बाद पहरेदार लोग बहुत से सिपाहियों को बुला लाए। उन सब ने अन्दर जाकर देखा तो राजा मरा पड़ा था। इतने में भालू उन पर भी टूट पड़ा। बस सब लोग अपनी जान लेकर सर पर पाँव रखकर भागे। भालू महल में से गुर्राता हुआ निकला और विद्वान के घर चला।

भालू को देखकर विद्वान को बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा -"हाय ! मेरी स्त्री को कितने कष्ट उठाने पड़े। आखिर उसकी सुन्दरता ही उसकी दुर्दशा का कारण बनी। वह काली कलूटी ही बनी रहती तो कितना अच्छा होता ! तब तो हमें यह सब कष्ट नहीं उठाने पड़ते।"

यह सोचकर उसने तीसरा नारियल निकाला और फोड़ते हुए मन ही मन कहा -"मेरी स्त्री का रूप फिर पहले जैसा हो जाए।" तुरंत उसकी स्त्री भालू का रूप छोड़कर फिर पहले जैसी हो गई। अब विद्वान को बड़ी खुशी हुई। उसने कहा -"यह नारियल ही सारे खुराफात की जड़ है। अगर हमें अपने भाग्य पर सन्तोष होता, तो इतने कष्ट झेलने नहीं पड़ते। यह कहकर वह अपनी स्त्री को समझाने बुझाने लगा। उस दिन से हुए बड़े सुख से रहने लगे।

पुराने जमाने में एक राजा था। उसकी इकलौती बेटी का नाम सुशीला था। राजा ने उस लड़की को बड़े लाड प्यार से पाला। उसे किसी चीज की कमी न होने दी। लेकिन जब वह लड़की सयानी हो गई, तो राजा और रानी में झगड़ा उठ खड़ा हुआ।

राजा ने कहा -"मैं अपने भाँजे* से उसका ब्याह करूँगा।" पर रानी ने उसका विरोध किया इसका एक भतीजा था। वह बहुत दिन से उससे सुशीला के ब्याह की बात सोच रही थी। इसलिए उसने कहा -"यह तो कभी नहीं हो सकता। मैं इसका ब्याह अपने भतीजे से करूँगी।"

इस तरह दोनों में कई बार कहासुनी हो गई। तब एक दिन राजा ने बिगड़ कर कहा -"मैं राजा हूँ। किसकी मजाल जो मेरा हुक्म तोड़े ? लड़की मेरी है। मैं जिससे चाहूँगा उसका ब्याह कर दूँगा।" यह कहकर राजा ने उसी दिन अपने भाँजे को बुला भेजा। उसके आने पर राजा ने उसे एक महल में छुपा दिया ताकि रानी उसको देख न ले। पुरोहित ने आकर पोथी-पत्रा लटकर मुहूर्त निश्चय किया और ब्याह की तैयारी होने लगी।

इधर रानी यह सब देखती चुपचाप कैसे बैठी रहती ? उसने सोचा -"मैंने उसको जन्म दिया है। पाल-पोसकर बड़ा किया है। फिर उसके ब्याह के बारे में मेरा हक न हो तो और किसका होगा ? अपमान का घूँट चुपचाप कैसे पी जाऊँ ? यह कहकर उसने गुप्त रूप से अपने भतीजे को बुला लिया और एक महल में छुपा दिया।

दोनों दूल्हे अलग-अलग महल में छिपे अपने भाग्य पर इठला रहे थे- "राजकुमारी मेरी

---

* भाँजे से ब्याह-भोले पाठक चौंके नहीं। दक्षिण में भाई बहन की सन्तानों में ब्याह प्रचलित है।

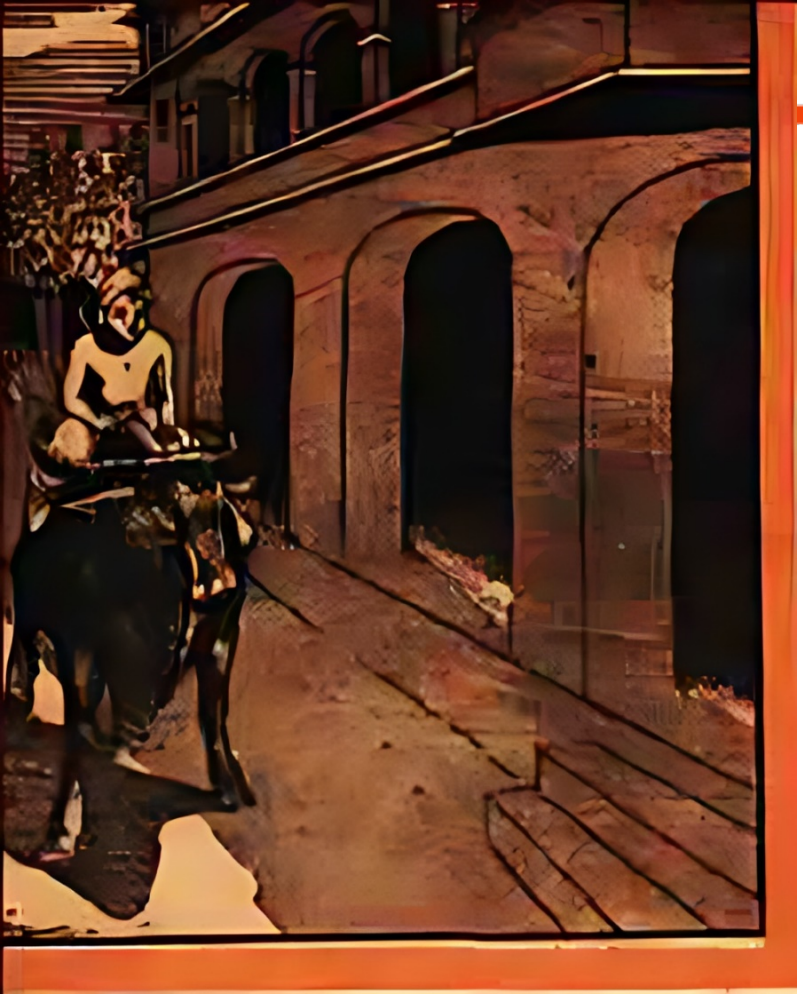

होगी। मैं उसका पति बनूँगा।" उनके लिए एक-एक पल एक-एक युग के समान बीत रहा था। उसी समय ब्रह्मा विष्णु और महेश भूमण्डल का भ्रमण करने निकले और घूमते फिरते उस नगर के नजदीक पहुँचे। जब विष्णु और महेश को इन दोनों दुल्हनों की बात मालूम हुई तो उन्होंने ब्रह्मा से पूछा -"इन दोनों में से किसके साथ इस लड़की का ब्याह होने जा रहा है ?" (बच्चों !तुम तो जानते ही हो कि भूमण्डल में जो कुछ होने वाला है, जिसके भाग्य में जो लिखा रहता है, ब्रह्मा यह सब पहले ही से जानते हैं। क्यों ना जानेंगे ? वही तो हमारे माथे पर लिख देते हैं और जैसा लिखते हैं वैसा ही होता है। इसलिए महेश ने ब्रह्मा से यह सवाल किया।)

"इन दोनों में से किसी के साथ उसका ब्याह न होगा। " ब्रह्मा ने जवाब दिया।

यह सुनकर महेश को बड़ा अचरज हुआ और उन्होंने पूछा -"तो फिर इस लड़की का ब्याह किसके साथ होगा?"

तब ब्रह्मा ने भैंसे पर चढ़कर सड़क पर जाते हुए एक लँगड़े के तरफ ऊँगली उठाई और कहा -"यही लँगड़ा इस लड़की का पति बनेगा।"

यह सुनकर महेश को बड़ा अचरज हुआ और दुख भी। "वाह ! इन दो सुन्दर राजकुमारों को छोड़कर इस लँगड़े के साथ राजकुमारी का ब्याह होगा। नहीं ! ऐसा कभी नहीं हो सकता। " उन्होंने कहा।

"इस लड़की के ललाट में जो कुछ लिखा है, वही होगा ,इसमें कुछ अदल-बदल नहीं हो सकता।" ब्रह्मा ने जवाब दिया।

"यही देखना है कि अदल बदल कैसे नहीं होता है।" यह कहकर महेश ने विष्णु से कहा -"जरा आप मेरे बृषभ पर बैठ जाएँ। मैं गरुड़ से एक काम लेना चाहता हूँ।" विष्णु तुरन्त गरुड़ पर से उतरकर

महेश के साथ वृषभ पर बैठ गए। तब महेश ने गरुड़ से कहा -"देखो गरुड़ ! यह लँगड़ा, जो भैंस पर चढ़ा आ रहा है, तुम उसे अपने चंगुल में दबोच कर सात समुन्दर पार बीहड़ जङ्गल में छोड़ आओ।" यह सुनकर गरुड़ उड़ा और एक ही झपटे में उस लँगड़े को उठाकर सात समन्दर पार एक बीहड़ वन में छोड़ आया।

महेश ने विष्णु से कहा -"अब देखना है कि उसे लँगड़े से सुशीला का ब्याह कैसे होता है।"

देवताओं के लिए तो यह एक तमाशा हुआ; पर बेचारे लँगड़े की जान पर ही आ गई। वह आज तक घर-घर भीख माँग कर किसी तरह पेट पालता रहा था। लेकिन अब इस घोर जङ्गल में भीख कौन देगा। यहाँ उसका रोना कौन सुनता ? गरुड़ उसे एक जङ्गल में नहीं बल्कि मौत के मुँह में डाल गया था। थोड़ी ही देर में वह भूख से छटपटाने और भगवान का नाम लेकर हाय ! हाय ! करने लगा। आखिर उसकी पुकार देवताओं के कान में पड़ी। विष्णु ने तरस खाकर गरुड़ से कहा -"उस बेचारे लँगड़े की जान जा रही है। तुम एक टोकरी पकवान ले जाकर

उसके सामने रख आओ। नहीं तो उस निर्दोष की हत्या का पाप हमारे सिर पड़ेगा।"

विष्णु की आज्ञा पाते ही गरुड़ पकवान ढूँढने चला गया। थोड़ी दूर भटकने के बाद उसे राजा के महल में दो झावे पड़े। उनमें से पकवानों की मीठी महक आ रही थी। गरुड़ ने झट उन झावों को उठा लिया और सात समन्दर पार गहन वन में लँगड़े के सामने रख दिया। फिर वहाँ से लौटकर विष्णु के पास आ गया।

लँगड़े ने बड़े उतावलेपन से एक झाव का मुँह खोल खोलते ही उसमें से एक सुन्दर राजकुमारी निकली और उसके गले में

जयमाला डाल दी। लँगड़ा हक्का-बक्का रह गया। मुँह से कोई बात न निकली। वह सिर्फ देखता रह गया। आखिर उसने अपने को सम्भाला और कहा -"मालूम होता है तुम किसी बड़े राजा की लड़की हो। मैं तेरा एक गरीब लँगड़ा। फिर तुमने मेरे गले में यह माला क्यों डाल दी ? इसका क्या मतलब है ?"

वह राजकुमारी अपनी रामकहानी सुनाने लगी-"सचमुच मैं एक राजकुमारी हूँ। मेरी माँ ने अपने भतीजे से मेरा ब्याह करना चाहा। लेकिन मेरे पिता को यह पसन्द न आई। इसलिए मेरी माँ ने मुझे एक झावे में छुपा दिया। दूसरे झावे में मिठाई वगैरह भर दिए। फिर मुझसे कहा कि मैं यह झावे तेरे दूल्हे के पास भेज दूँगी। ज्यों ही वह इस टोकरी का ढकना खोले, तू उसके गले में वरमाला डाल देना। बस, तुम दोनों का ब्याह हो जाएगा। यह कहकर माँ चली गई। इतने में कोई उन झावों को उठा ले चला। मैंने सोचा कि मैं वही जा रही हूँ जहाँ मेरी माँ मुझे भेजना चाहती थी। जब तुमने यह झावे का मुँह खोला तो मैंने तुम्हारे गले में माला डाल दी।"

राजकुमारी की कहानी सुनकर लँगड़े को बड़ा अचरज हुआ। वह सोचने लगा -"यह सब भाग्य का फल है। नहीं तो कहाँ यह सुन्दर राजकुमारी और कहाँ में एक कुरूप लँगड़ा।" उसे बड़ी जोर की भूख लग रही थी। बस, गपशप करते हुए मिठाई उड़ाने लगा।

यहाँ रानी ने देखा कि एक गरुड़ झावे उड़ाए लिए जा रहा है। लेकिन वह किस

कहती ! मुँह खोलते ही सारा भेद खुल जाता। वह गुमसुम खड़ी रही।

जब ब्याह की घड़ी नजदीक आई, तो राजा ने दुल्हन को बुला लाने के लिए दासियों को भेजा। लेकिन जब उन्होंने लौटकर कहा कि दुल्हन का कहीं पता नहीं है तो राजा आग बबूला हो गया। उसने तुरन्त जाकर रानी से पूछा -"सुशीला कहाँ है ?"

रानी ने मुँह बिगाड़ कर कहा -"मैं क्या जानूँ ? जब से आपने कह दिया कि तुम्हें उसके ब्याह के बारे में बोलने का हक नहीं है तब से मैंने उससे नाता ही तोड़ लिया। जब आपको मेरी बात की परवाह ही नहीं है तो मैं फिजूल अपनी टाँग ने क्यों अड़ाती ? जाइए, जहाँ मिले खोजिए और ले आइए अपनी लाडली बेटी को।"

बेचारे राजा को बड़ा दुख हुआ कि यूँ बात बिगड़ गई। वह उदास मन से राजकुमारी को ढूँढने चला गया।

जब दुल्हन के गायब होने की खबर दोनों दुल्हनों को मालूम हुई, तो वह अपना पीटा मुँह लेकर वहाँ से भाग गए। उनको यूँ चोरों की तरह भागते

देखकर महेश ने ब्रह्मा से पूछा - "क्यों भाई ! आखिर यह क्या हुआ ? इन दोनों में से किसी के साथ राजकुमारी का ब्याह नहीं हुआ ?"

"कैसे होता भाई ! मैंने तो पहले ही कह दिया था कि उस लड़की का ब्याह उसी लँगड़े से होगा। ब्याह हो गया है और इस समय वह लड़की सात समन्दर पार एक घने जङ्गल में उसे लँगड़े से हँस-खेल रही है।" ब्रह्मा ने मुस्कुराते हुए कहा।

महेश को उनकी बात पर विश्वास न हुआ। उन्होंने कहा -"कहाँ हैं वे ? जरा जाकर देखें तो सही।"

तीनों देवता पलक झपकते सात समुन्दर पार घने जङ्गल में पहुँचे। वहाँ दूल्हा दुल्हन दोनों को हँसते खेलते देखा, तो उन्हें तरस आ गया। विष्णु ने कहा -"यह राजकुमारी ऐसी सुन्दर है कि देवता भी दङ्ग रह जाएँगे। इसकी सुन्दरता तो सारे जङ्गल को उजाला दे रही है। ऐसी सुन्दर लड़की का इस बेढङ्गे लड़के के साथ गठबन्धन कर देना क्या उचित था ? अच्छा, जो हो गया सो हो गया। विधि का लिखा को मेटनहारा ! अब हम इतना करें कि इस लँगड़े को पैर दें और इसको एक सुन्दर राजकुमार बना दें।" यह कहकर विष्णु ने वरदान दिया जिससे वह कुरूप लँगड़ा एक सुन्दर राजकुमार बन गया। ब्रह्मा ने उसकी उम्र बढ़ा दी। महेश ने उसे बुद्धि और बल का वरदान दिया।

"ब्रह्मा जो एक बार लिख देते हैं उसे कोई नहीं मिटा सकता है। ब्रह्मा की कलम में बड़ी ताकत है।" महेश ने ब्रह्मा की बड़ाई करते हुए कहा। विष्णु ने फिर गरुड़ का आज्ञा दी कि इस दम्पति को लेकर फिर राजमहल में पहुँचा दो। गरुड़ ने वैसा ही किया। तब तीनों देवता अपने लोक लौट गए।

सुशीला ने अपने माँ-बाप से सारी कहानी कह सुनाई। राजा और रानी दामाद को देखकर बड़े खुश हुए। राजा ने उसे अपना सेनापति बना दिया।

लँगड़ा अब लँगड़ा न रहा। वह बड़ा बहादुर और होशियार हो गया। जो भी देखता उसके आगे सर झुकाता था और मन ही मन कहने लगता- "विधि का लिखा को मेटनहारा !"

इस बार वर्धमान का पिञ्जरा और भी सजाया गया। चपला ने और भी चार-पाँच गद्दे बिछाकर वर्धमान के लिए खूब मुलायम बिछोना बिछा दिया। इससे उसको राह में ज्यादा तकलीफ न हुई। किसान घोड़े पर सवार था। उसके पीछे चपला भी वर्धमान की पेटी को हाथ में थामे बैठ गई। चपला के अनुरोध करने पर वे लोग राह में जगह-जगह रुकते धीरे-धीरे चलने लगे। क्योंकि उसे डर था कि राह की थकान से कहीं वर्धमान की तन्दुरुस्ती न बिगड़ जाए।

लेकिन उसके पिता को वर्धमान की कुछ भी परवाह न थी। वह जितनी जल्दी हो, दोनों हाथों रुपए लूटना चाहता था। इसलिए वह राह के हर एक गाँव में वर्धमान का तमाशा दिखाता हुआ चला। लोगों के कानों में अब तक इस विचित्र जीव की शोहरत फैल चुकी थी जो कि ठीक उन्हीं की तरह खाता-पीता, हँसता-बोलता और सब काम करता है। इसलिए तमाशा देखने वालों की कमी न थी। किसान के आगे रूपयों की वर्षा हो रही थी। दिन-दिन वर्धमान का स्वास्थ्य बिगड़ता जा रहा था। वह दिन-दिन घुल-घुल कर दुबला पतला हो रहा था। लेकिन किसान को इसकी क्या परवाह ! उसे डर था तो इस बात का कि कहीं यह राजधानी पहुँचने के पहले ही न मर जाए। अगर ऐसा हुआ तो वह राजा और रानी से इनाम नहीं पा सकेगा।

"क्यों भई ! तुम मुझे धोखा देकर मर तो न जाओगे ? यदि ऐसा हुआ तो सारी बात ही चौपट हो जाएगी। अरे ! जरा राजधानी पहुँचने तक तो बचे रहो।" किसान ने वर्धमान से कहा।

आखिर वे राजधानी पहुँचे। वहाँ कई जगह वर्धमान का तमाशा दिखाया गया। सारे शहर में धूम मच गई। इसी समय राजदूतों ने किसान के पास आकर कहा की -"रानी साहिबा इसे देखना चाहती हैं। इसलिए चलकर रनवास में तमाशा दिखाओ।" बस, यह सुनते ही किसान ने सोचा कि मेरी तकदीर खुली। वह अब तक इसी मौके की ताक में बैठा था। वह मन ही मन सोचने लगा कि रानी वर्धमान का तमाशा देखने के बाद उसे क्या-क्या इनाम देगी ?

अब वर्धमान के मन में उस किसान के प्रति कुछ भी श्रद्धा नहीं रह गई थी। वह अपनी इस जिन्दगी से बेजार हो उठा था। वह सोचने लगा कि कैसे यहाँ से भाग निकलूँ। इसी कोशिश में अगर जान भी चली जाए, तो कोई परवाह नहीं।

वह किसान तुरन्त वर्धमान की पेटी हाथ में लेकर रनबास जा पहुँचा। दोनों ने झुक कर रानी साहिबा को सलाम किया और पेटी खोलकर वर्धमान को दिखाया। उसे देखकर रानी साहिबा बहुत खुश हुई। उन्होंने पूछा -"तुम्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। क्या तुम हमारी बोली समझते हो ? क्या तुम मुझसे बातचित कर सकते हो ?"

"मैं आपकी बोली समझता हूँ। मैं आपसे बातचीत भी कर सकता हूँ। बड़े सौभाग्य की की बात है कि मुझे आपके दर्शन हुए।" वर्धमान ने कहा।

अब तो रानी की खुशी का ठिकाना न रहा। उन्होंने किसान से पूछा "क्या तुम इसे मुझे दे दोगे ? मैं तुम्हें इसके लिए एक लाख अशर्फियाँ दूँगी। यह सुनकर किसान मन ही मन फुल उठा। उसको इससे ज्यादा और क्या चाहिए था ? तिस पर वर्धमान की तन्दुरुस्ती भी दिनों दिन बिगड़ती जा रही थी। कहीं वह मर गया तो ? यह सब वह पहले ही सोच चुका था। इसलिए बहुत तुरन्त राजी हो गया।

"क्यों मेरे प्यारे मुन्ने ! तुम अपने मालिक को छोड़कर मेरे पास रहना पसन्द करोगे ?" रानी ने बड़े दुलार के साथ वर्धमान से पूछा।

मुझे आपके यहाँ रहने में बड़ी खुशी होगी। लेकिन मेरी एक विनती है। आप इस चपला को भी यहीं रहने दीजिए। क्योंकि इसे छोड़कर मैं नहीं रह सकता।" वर्धमान ने जवाब दिया।

"अच्छा, तो चपला भी यही रहेगी। मैं इसका सारा इन्तज़ाम कर दूँगी।" तुरन्त रानी

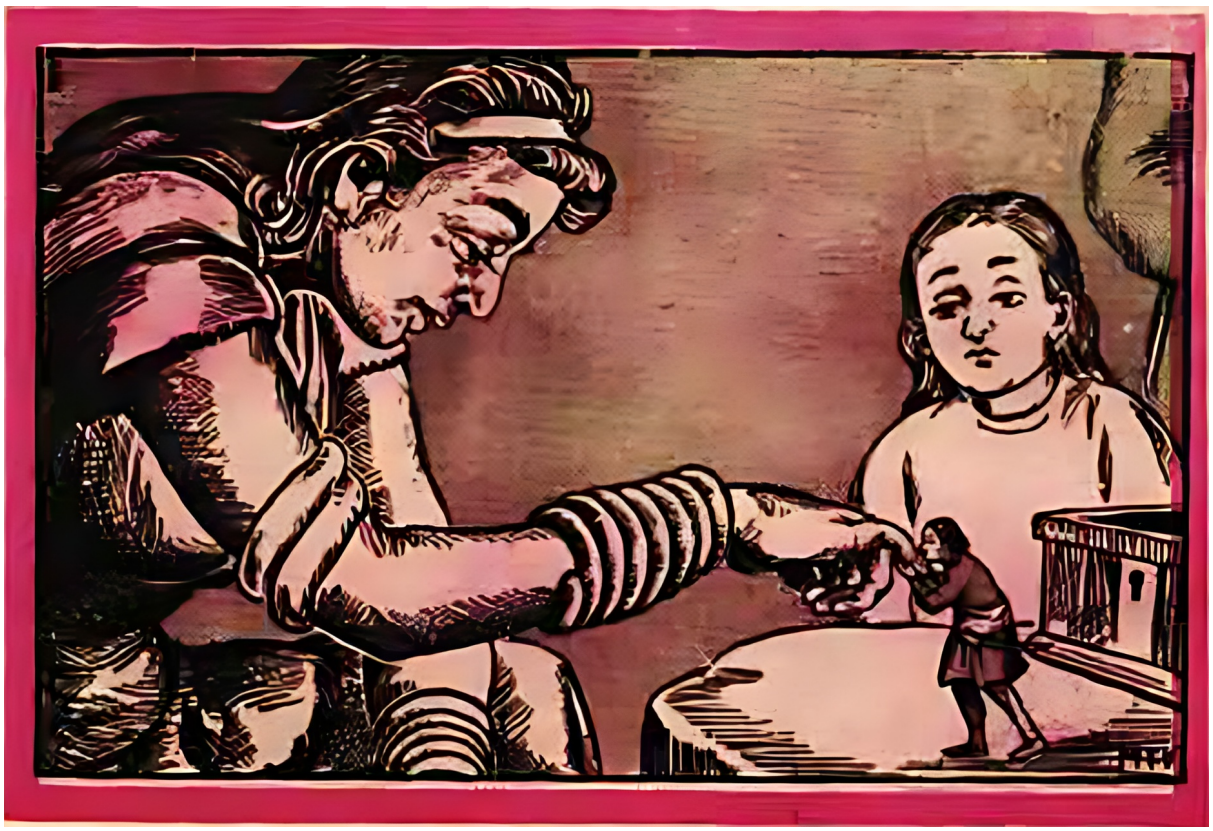

ने कहा। किसान यह बात सुनते ही और भी खुश हो गया। उसके लिए यह बड़े गर्व की बात थी कि उसकी बेटी राजमहल में रहे। वह रानी साहिबा और चपला से विदा लेकर घर चला तो खुशी के मारे उसके पैर धरती पर नहीं पड़ते थे।

वर्धमान को सावधानी से अपनी हथेली पर उठाकर रानी सीधे राजा साहब के पास गई। वर्धमान को उनके सामने रखकर उन्होंने पूछा - "क्यों ? इससे बढ़कर अजीब चीज आपने कहीं देखी है ?"

अचरज के मारे राजा के मुँह से बात न निकली। उन्होंने वर्धमान से पूछा - "तुम कौन हो ? कहाँ से आए हो ? तुम अपनी सारी कहानी हमें कह सुनाओ।"

वर्धमान ने जब अपनी राम कहानी कह सुनाई तो राजा के अचरज का ठिकाना न रहा।

अब वर्धमान बड़े आराम के साथ राजमहल में रहने लगा। चपला हमेशा उसी के साथ रहती। उसके लिए रानी साहिबा ने एक सुन्दर सन्दूक बनवा दिया। उसमें खिड़कियाँ और दरवाजे भी थे। अन्दर मेज-कुर्सियाँ भी रख दी गई। उसके लिए एक सुन्दर पलङ्ग भी उसमें डाल दिया गया। रानी ने

उसके लिए दो नन्हीं सी चाँदी की थालियाँ और कटोरियाँ बनवाई। जब राजा रानी भोजन करने बैठते, तो वर्तमान भी अपनी नन्ही थाली लेकर उनके साथ बैठ जाता ,उसको उतने ढङ्ग से खाते देखकर रानी साहिबा को बड़ी खुशी होती थी।

एक दिन भोजन के समय वर्धमान के सिर पर बड़ी आफत आ गई। लेकिन ईश्वर की कृपा से वह बाल बाल बच गया। बात यह हुई-- रानी साहिबा के पास एक कुबड़ा और बौना नौकर रहता था। वह भी वर्धमान से पाँच गुना बड़ा था। एक दिन उसने

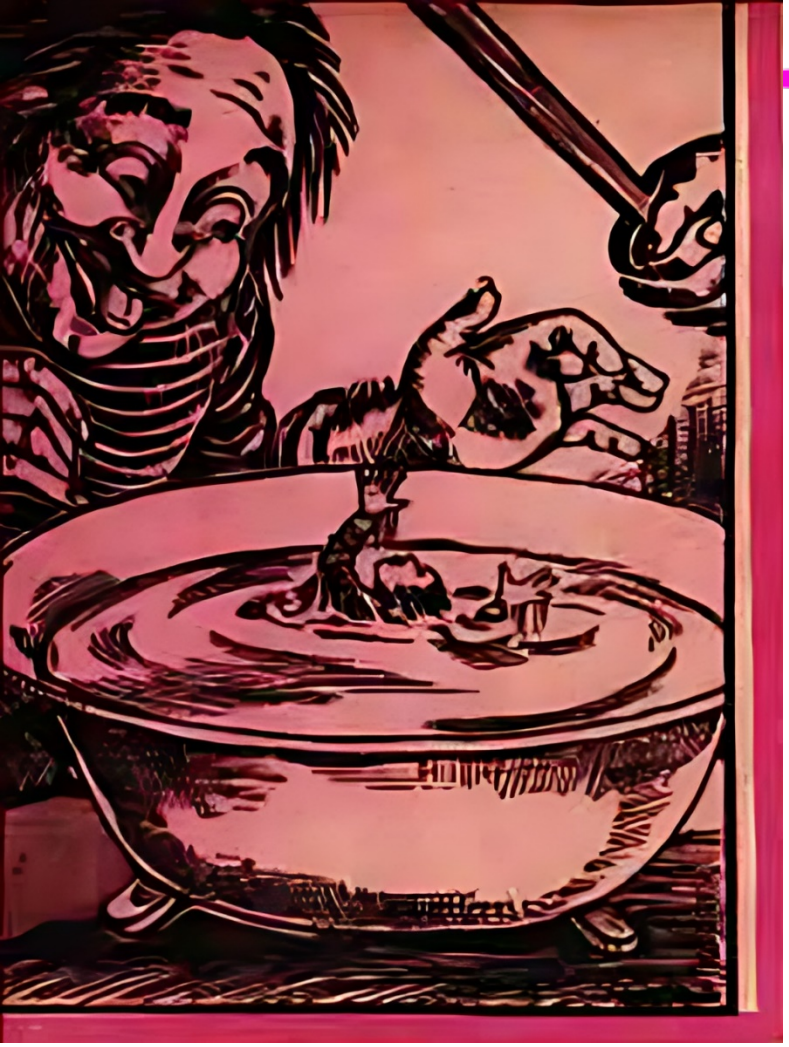

अकेले में वर्धमान को पकड़ लिया और एक घी के कटोरे में डालकर हँसता और तालियाँ बजाता भाग गया। कुछ क्षण बाद जब रानी साहिबा और चपला उधर से निकली, तो घबराकर मुँह बाए खड़ी रही। फिर चपला ने किसी तरह उसे बाहर निकला। तब तक वर्धमान बहुत सा घी पीकर बेहोश हो गया था। बहुत देर बाद वह फिर होश में आया। लेकिन उस बौने को इसके लिए ऐसा पाठ पढ़ाया गया कि वह फिर कभी न भूल सके। इस बौने ने पहले भी एक बार ऐसा ही किया था। न जाने क्यों उसे वर्धमान को रुलाने में बड़ा मजा आता था। पिछली बार उसने एक हड्डी के खोखले में वर्धमान को कमर तक घुसा दिया था। आखिर वर्धमान बड़ी मुश्किल से निकल सका था। उसने उस बार रानी साहिबा से शिकायत न की थी। इसी से बौना बच गया था। लेकिन अब की तो उसे हमेशा के लिए पिण्ड छूट गया।

वर्धमान इस तरह दो साल तक राजमहल में रहा। उसे वहाँ सब तरह का आराम था। लेकिन मन ही मन वह चिन्ता में घुला जा रहा था। उसका मन इस राक्षसों की दुनिया से भाग कर फिर से इंसानों की दुनिया में जाने के लिए छटपटा रहा था।

उसी समय राजा और रानी को किसी काम से समुद्र के किनारे के एक गाँव में जाना पड़ा। रानी के साथ चपला और वर्धमान भी चले। सफर में दोनों बहुत थक गए।

"मेरा जी बिल्कुल अच्छा नहीं है। अगर मुझे एक बार समुद्र की हवा खिला लो, तो अच्छा हो।" वर्धमान ने चपला से कहा। उसने मन में सोचा - "चलो, कम से कम एक बार समुद्र के दर्शन तो हो जाए।"

लेकिन चपला भी बहुत थकी-माँदी थी। इसलिए उसने वह पेटी एक छोकरे के हाथ में देकर कहा -"देखो ! इसको हाथ से कभी छोड़ना मत। हिफाजत से रखना।"

लेकिन वह लड़का बिल्कुल अल्हड़ था। उसने वर्धमान की पेटी समुद्र के किनारे एक चट्टान पर रख दी और खुद चिड़ियों के अण्डे खोजने कहीं चला गया।

उसी समय एक बाज उड़ता हुआ वहाँ आया। उसने उस पेटी को देखा तो झपटा और पञ्जों में पकड़कर समुद्र की ओर चला गया।

रानी साहिबा और चपला ने समझा कि उनका प्यारा नन्हा "मुन्ना" समुद्र में डूब गया। उन्हें बड़ा दुख हुआ। लेकिन वास्तव में वर्धमान समुद्र में डूबा नहीं। उस बाज ने थोड़ी दूर उड़ाने के बाद पेटी को छोड़ दिया। पेटी समुद्र की लहरों में उतराती बड़ी दूर चली गई। इतने में एक जहाज उधर से निकला। जहाजियों की नजर उसे पर पड़ी। उन्होंने वर्धमान को निकाल लिया। फिर उसका सारा हाल सुनाने के बाद उसे अपने देश में उतार दिया।

अब वर्धमान ने देश-विदेश घूमना छोड़ दिया। उसने विवाह कर लिया। चार-पाँच वर्षों में वह दो-तीन बच्चों का बाप भी हो गया। वह अब व्यापार करता है और बड़े मजे से अपनी जिन्दगी बिता रहा है।

अब भी उस देश के सभी लोग क्या बच्चे, क्या जवान, क्या बूढ़े बड़े चाव से उसकी यात्रा की विचित्र कहानी कहते सुनते हैं। अब भी उन कहानियों को सुनकर उनके अचरज का कोई ठिकाना नहीं रहता।

क्यों बच्चों ! वर्धमान की विचित्र यात्रा की यह कहानी सुनकर क्या तुम्हारे मन में अचरज नहीं हुआ ?

[समाप्त]

CHANDAMAMA (Hindi) FEBRUARY 1950 Regd. No. M. 5452